तौबा व दुआ़

इस किताब में आप पढ़ेंगे.......

-: मुअल्लिफ़ :-

ख़लीफ़ए शैख़ुल इस्लाम ह़ाजी इब्राहीम भाई वडीयावाला

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तौबा व दुआ़

-: मुअल्लिफ़ :-
ख़लीफ़ए शैखुल इस्लाम
हा़जी इब्राहीम भाई वडीयावाला
प्रेसिडेन्ट : मोहसिने आज़म मिशन हेड ऑफ़िस
अह़मदाबाद, **M : 96 24 22 12 12**

किताब : तौबा व दुआ़ (हिन्दी)

मुअल्लिफ़ : ख़लीफ़ए शैख़ुल इस्लाम

हाजी इब्राहीम भाई वडीयावाला (अह़मदाबाद)

टाइप-सेटींग : जनाब तौफ़ीक़ अह़मद अशरफ़ी (बड़ौदा)

सिने इशाअत : नवम्बर-2020

नाशिर : मोह़सिने आज़म मिशन हेड ओफ़िस 2/B कीर्तिकुंज

सोसायटी शाहे आ़लम टोलनाका अह़मदाबाद-380028

-: मिलने का पता :-

मक्तबए शैख़ुल इस्लाम, अलिफ़ किराना के सामने,

रसूलाबाद, शाहे आ़लम अह़मदाबाद-380028

और मोह़सिने आज़म मिशन की तमाम ब्रान्चें

कोन्टेकट : 9624221212

फ़ेहरिस्त	सफ़्हा नम्बर

पेशे लफ़्ज़

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ

अ़रबी भाषा में तौबा का अर्थ और मत़लब रुजूअ़ करना या'नी वापस आना या लौटना है। लिहाज़ा अल्लाह की राह में तौबा का मत़लब येह है कि कोई अल्लाह के ख़ौफ़ से और अल्लाह की रिज़ा (ख़ुशी) के लिए उन कामों को छोड़ दे जिस से अल्लाह ने रोका है और उन कामों को बजा लाए (शुरूअ़ करे) जिन को करने का हुक्म अल्लाह ने दिया है। ख़ुलासा येह कि बुराई को छोड़ कर अच्छाई की त़रफ़ वापस आने का नाम ही तौबा है। इसी त़रह़ दुआ़ भी बन्दे को अपने रब से।

क़ुरआने करीम और अह़ादीसे मुबारका में तौबा व दुआ़ की ज़रूरत, अहम्मिय्यत, फ़ज़ीलत व फ़ाइदों का ज़िक्र कसरत के साथ मिलता है। औलियाए किराम ने भी अपनी किताबों में तौबा व दुआ़ के मौज़ूअ़ (विषय) पर बहुत तफ़्सील से बयान किया है।

इस किताब "**तौबा व दुआ़**" में मुअल्लिफ़े किताब ख़लीफ़ए शैख़ुल इस्लाम जनाब ह़ाजी इब्राहीम अशरफ़ी साहिब ने तौबा और दुआ़ के तअ़ल्लुक़ से एक मुफ़ीद मज़्मून मुरत्तब कर के पेश किया है।

मुअल्लिफ़े मौसूफ़ ने किताब में क़ुरआने करीम की आयात के तर्जमे व तफ़्सीर के साथ ज़िक्र किया है। अम्बिया व सालिह़ीन के वाक़िआ़त के ज़रीए मौज़ूअ़ को ख़ूब अच्छे अन्दाज़ में पेश किया है।

इस किताब में आप को दुआ़ का त़रीक़ा और दुआ़ की क़बूलियत व अदमे क़बूलियत की वुजूहात के बयान के साथ साथ तौबा के तअ़ल्लुक़ से बुज़ुर्गों के बयान कर्दा शराइत़ (शर्तों) को भी यक्जा (एक ही जगह) मिल जाएंगे।

अल्लाह तआ़ला जनाबे मुअल्लिफ़ की इन काविशों को क़बूल फ़रमाए और उन के इल्मो अ़मल में बरकत नाज़िल फ़रमाए और बुज़ुर्गों के पैग़ाम को आ़म करने के इस मिशन में उन्हें त़ाक़त व कामयाबी अ़त़ा फ़रमाए। आमीन

20-10-20

सय्यिद ह़सन अ़स्करी अशरफ़ अशरफ़ी अल जीलानी
सज्जादा नशीन आस्तानए हुज़ूर मुह़द्दिसे आ'ज़मे हिन्द व
सज्जादा नशीन आस्तानए हुज़ूर अमीरे मिल्लत رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تعالٰی

तौबा (तरीकए तौबा)
(तौबा वसीला दुआ)

दुन्या में कुछ तो ऐसे है कि जब उन से कहा जाए कि तौबा करो, तो कहते है कि हम को तौबा की हाजत नहीं है और कहते है कि हम ने ऐसा किया ही क्या है कि हम तौबा करे ? और बा'ज़ कहते है अभी हमारे पास ज़िन्दगी पड़ी है बा'द में तौबा कर लेंगे या बुढ़ापे में तौबा कर लेंगे ।

और बा'ज़ ऐसे है कि वोह वसीले को शिर्क कहते है और कहते है हमें वसीले की ज़रूरत नहीं हमारे आ'माल ही हमारा वसीला है और बा'ज़ चिल्ला चिल्ला कर रियाकाराना अन्दाज़ में दुआए करते है उन लोगों को तौबा व दुआ का सहीह इस्लामी तरीक़ा समझाने के लिये येह किताब तय्यार की गई । मौला तआला नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े इसे मक़्बूलियत का जामा पहनाए और क़ौम को सच्ची और सहीह समझ अता फ़रमाए । आमीन

हुज़ूर के वसीले से हज़रते आदम की तौबा क़ुबूल होना

क़ुरआने करीम पारह 1 सूरए अल बक़रह आयत नं 36-37 में हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का वाक़िआ कुछ इस तरह बयान किया गया कि

तर्जमा : शैतान ने उन्हें लग़्ज़िश दी और जहां रहते थे वहां से निकलवा दिया और हम ने फ़रमाया नीचे उतरो तुम आपस में एक दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हें एक मुक़र्रर वक़्त तक वहां रहना है और बरतना है फिर आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे सीख लिये तो अल्लाह ने उन की तौबा क़ुबूल की बेशक! वोही तौबा क़ुबूल करने वाला महेरबान है ।

जब सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام और हज़रते हव्वा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को जन्नत से ज़मीन पर जाने का हुक्म हुवा तो हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام

सरज़मीने हिन्द में सरानदीप जिस को आज श्रीलंका कहते है वहां उतरे और मां ह़व्वा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا जिद्दा में उतारे गए।

अबुल बशर सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने ज़मीन पर आने के बा'द ह़या की वजह से तीन सौ (300) बरस तक आस्मान की त़रफ़ नहीं देखा अगर्चे ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام का लक़ब "कसीरुल बुका" (बहुत ज़ियादा रोने वाला) हैं और आप के आंसू तमाम ज़मीन वालों के आंसूओं से ज़ियादा है मगर ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के आंसू ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام और तमाम दुन्या वालों के आंसूओं से भी ज़ियादा है।

ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم रिवायत करते है कि जब ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام पर इताब हुवा तो आप तौबा की फ़िक्र में परेशान थे, इसी परेशानी के आ़लम में आप को याद आया कि ब वक़्ते पैदाइश जब मैं ने सर उठा कर देखा था तो अ़र्श पर लिखा हुवा पाया لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللہِ मैं ने सोचा कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में जो रुत्बा मुहम्मद रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़ासिल है वोह किसी और को मुयस्सर नहीं है अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने नाम के साथ अ़र्श पर उन का नाम लिखा है।

लिहाज़ा ह़ज़रत ने अपनी दुआ़ में **रब्बना ज़लमना** के साथ येह मिला कर अ़र्ज़ किया : यानी ऐ अल्लाह ! तेरे बन्दए ख़ास मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल मैं तुझ से मग़फ़िरत चाहता हूं येह दुआ़ करनी थी के अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उन की तौबा क़ुबूल की और मग़फ़िरत फ़रमाई।

इस रिवायत से साबित हुवा कि बुज़ुर्गाने दीन और मक़्बूलाने बारगाह के वसीले से दुआ़ करना जाइज़ है। और सिर्फ़ जाइज़ ही नहीं बल्कि येह अल्लाह तआ़ला का पसन्दीदा अ़मल है और सुन्नते अम्बिया है।

यहूदी भी हमारे नबी के वसीले से दुआए करते थे

हमारे आक़ा के हमारे बीच में तशरीफ़ लाने के पहले भी बनी इसराईल जब जब उन पर कोई मुसीबत आती या दुश्मनों से लड़ाई का मुआमला पैश आता तो सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले से अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ़ए करते थे और फ़त्ह़ व नुस्रत और कामियाबी पाते थे। जैसा के अल्लाह तबारक व तआ़ला पारह 1 सूरए अल बक़रह आयत नं 89 में फ़रमाता है :

तर्जमा : और इस से पहले वोह इसी नबी के वसीले से काफ़िरों पर फ़त्ह़ मांगते थे।

उन के अल्फ़ाज़ कुछ इस त़रह़ के रहते थे कि : **"अल्लाहुम्म फ़त्ह़ अलैना वंसुर्ना बिन्नबिय्यिल उम्मी"** या'नी : ऐ अल्लाह ! हमें नबिये उम्मी के सदके़ में फ़त्ह़ और मदद अ़ता फ़रमा।

इस आयत से साबित हुवा कि हुज़ूरे पाक की दुन्या में तशरीफ़ आवरी से पहले भी आप की शौहरत थी। आप का दुन्या में आ जाने के बा'द मगर ए'लाने नबुव्वत के पहले भी लोग आप के इन्तिज़ार में थे आप के वसीले से दुआ़ए क़ुबूल होती थी, लोग मांगा करते थे और पाते थे और बिग़ैर मांगे भी अल्लाह देता था, देता है और नबी के सदक़े में देता रहेगा और येह भी साबित हुवा अल्लाह तआ़ला के मक़्बूल बन्दों का वसीला पकड़ना जाइज़ है और येह भी साबित हुवा कि वहाबिया जो वसीले के मुन्किर है वोह झूटे है।

अल्लाह पाक फ़रमाता है : मुझ से मांगो

दुआ़ मोमिन का हथियार है, दुआ़ इबादत का मग़्ज़ है, दुआ़ बन्दे को अपने रब से मिला देती है। मगर दुआ़ की क़ुबूलियत की कुछ शर्त़ भी है। ह़राम रिज़्क़ खाने वाले की दुआ़ क़ुबूल नहीं होती, दुआ़ करने से पहले कुछ नेक अ़मल भी करना चाहिये। अल्लाह

तआ़ला की ह़म्दो सना करनी चाहिये, दुआ़ से पहले और दुआ़ के बा'द सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ना चाहिये और क़ुबूलियत के यक़ीन के साथ दुआ़ करनी चाहिये अपने लिये अपने पीर, अपने मां बाप से दुआ़ करानी चाहिये और नबिये पाक और औलियाए किराम के वसीले से दुआ़ की जाए तो जल्दी और ज़रूर क़ुबूल होने के इम्कानात है। अल्लाह तआ़ला खुद फ़रमाता है : मुझ से मांगो में अता करूंगा। जैसा के पारह 2 सूरए अल बक़रह आयत नं 186 में अल्लाह पाक फ़रमाता है :

तर्जमा : ऐ मह़बूब ! जब मेरे बन्दे मेरे बारे में तुम से पूछे तो कहो कि मैं क़रीब हूं पुकारने वाले जब मुझे पुकारे तो मैं उन की दुआ़ क़ुबूल करता हूं तो उन को चाहिये के मुझ से दुआ़ करे और मेरा हुक्म माने कि वोह राह पाए।

खुद रब्बे करीम हम से फ़रमाता है कि "मुझ से मांगो मैं तुम से क़रीब हूं, मैं अ़त़ा करूंगा" बन्दे के लिये इस से बढ़ कर कौन सी खुश ख़बर हो सकती है ? मगर सुवाल येह पैदा होता है कि हम को अपनी दुआ़ओं का असर क्यूं नज़र नहीं आता ? तो इस का जवाब येह है कि वैसे तो हर दुआ़ क़ुबूल हैं मगर वोह कभी अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से फ़िल फ़ौर (तुरंत) होती है और कभी ताख़िर से होती है। कभी बन्दे की ह़ाजत दुन्या में पूरी कर दी जाती है तो कभी वोह दुआ़ बन्दे के हक़ में तौशए आख़िरत बना दी जाती है और उस का अज्रो सवाब आख़िरत में दिया जाता है कभी बन्दे पर आने वाली बलाए दूर हो जाती है कभी बन्दे का फ़ाएदा दूसरी चीज़ में होता है वोह अ़त़ा किया जाता है।

कभी ऐसा भी होता है कि बन्दा अल्लाह तआ़ला का मक़्बूल होता है तो उस की ह़ाजत रवाई में इस लिये देर होती है ताकि वोह दुआ़ में मश्ग़ूल रहे कभी कभी ऐसा भी होता है कि बन्दे में सिद्क़ो

इख़्लास की कमी होती है इस लिये दुआ़ क़ुबूल नहीं होती कभी बन्दा ऐसी चीज़ का सुवाल कर बैठता है जो उस के ह़क़ में बुरा होता है इस लिये दुआ़ क़ुबूल नहीं होती।

ह़राम रिज़्क़ खाने वाले की दुआ़ए भी क़ुबूल नहीं होती। जैसा कि पारह 2 अल बक़रह आयत नं 2 जब नाज़िल हुई और अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि ज़मीन में जो कुछ ह़लाल और पाकीज़ा है उसे खाओ और शैत़ान के नक़्शे क़दम पर न चलो।

सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते है कि जब मैं ने येह आयत सरकारे दो आ़लम के सामने तिलावत फ़रमाई तो ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे ह़क़ में दुआ़ फ़रमाए कि अल्लाह मुझे "मुस्तजाबुद्दा'वात" बना दे या'नी मेरी हर दुआ़ क़ुबूल हो तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **ऐ सा'द ! अपनी ख़ुराक पाक करो, क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **की जान है आदमी अपने पेट में एक लुक़्मा ह़राम का डालता है तो चालीस** (40) **दिन तक क़ुबूलियत से मह़रूम हो जाता है।** मा'लूम हुवा के ह़राम रिज़्क़ खाने वाले की दुआ़ क़ुबूल नहीं होती।

येह भी देखा गया कि आदमी बला या मुसीबत आने पर अपने को कोसता है। जैसे कहता है : अल्लाह मुझे मौत दे या अपने माल और औलाद के ह़क़ में बद दुआ़ करता है अब अगर अल्लाह वोह दुआ़ए क़ुबूल कर ले तो वोह हलाक हो जाए। अस्ल बात येह है कि दुआ़ करने वाला पहले अपने गुनाहों से तौबा करे, फिर दिल की ह़ुज़ूरी के साथ और इख़्लास और क़ुबूलियत के यक़ीन के साथ दुआ़ करे नाजाइज़ चीज़ें न मांगे और येही वजह है कि लोग मक़्बूलाने बारगाह के आस्तानों पर जा कर दुआ़ए मांगा करते है।

आख़िर में हज़रत शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन के येह अल्फ़ाज़ याद रखे :

जो बे असर हो के रह न जाए
दराज़ वोह दस्ते इल्तिजा कर
दुआ से कब रोकता हूं मैं तुझे
मगर समझ बुझ कर दुआ कर

तौबा और नदामत से गुनाह मिटा दिये जाते है

अल्लाह तआला अपने पाकीज़ा कलाम में हम गुनहगारों को गुनाहों से पाक होने का नुस्ख़ा बता रहा है। येह नुस्ख़ा कोई नुस्ख़ा नहीं बल्कि एक कीमिया है जो लोहे को सोना बना देता है या'नी कि गुनहगार को पारसा बना देता है। जैसा के रब्बे काएनात पारह 4 सूरए आले इमरान आयत नं 135 में फ़रमाता है :

तर्जमा : जब कोई बेहयाई या गुनाह कर के अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठे और अपने गुनाहों को याद कर के (नादिम हो कर) अल्लाह से मुआफ़ी चाहे और जान बुझ कर अपने गुनाहों पर अड़ न जाए तो कौन हैं अल्लाह के सिवा जो गुनाह बख़्शे ?

सच्ची तौबा की तीन (3) शराइत हैं : (1) अपने गुनाहों का इक़रार (2) गुनाहों पर नादिम होना और (3) आइन्दा अब गुनाह न करने का पक्का इरादा करना।

जब बन्दे में येह चीज़ पाई जाती है तो अल्लाह ख़ुश होता है और बन्दे को ज़रूर मुआफ़ करता है, अब ऐसे तौबा करने वालों के लिये यक़ीनन जन्नत है।

तिहान एक ख़ुर्मा फ़रोश (खजूर बेचने वाला दुकानदार) था उस के पास एक औरत खजूरे खरीदने आई तिहान ने कहा कि येह ख़ुरमे तो अच्छे नहीं है अच्छे ख़ुरमे मकान के अन्दर के हिस्से में है इसी बहाने से वोह औरत को अन्दर ले गया और पकड़ कर उस से लिपट गया और मुंह चुम लिया (बोसा दिया) औरत ने कहा : ख़ुदा

से डर ! येह सुनते ही वोह डर गया और उस औ़रत को छोड़ दिया बहुत शर्मिन्दा हुवा और नबिये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर आ कर अपना ह़ाल बयान किया। इस पर येह मुबारक और मुज़्दा देने वाली आयत नाज़िल हुई।

और एक रिवायत येह है कि एक अन्सारी और एक सक़फ़ी दोनों दोस्त थे दोनों में मह़ब्बत थी और एक दूसरे को भाई बनाया था सक़फ़ी जिहाद में गया और अपने मकान की निगरानी अपने अन्सारी भाई को सोंप कर गया। एक दिन अन्सारी गोश्त लाया जब सक़फ़ी की औ़रत ने गोश्त लेने के लिये दरवाज़े के बाहर हाथ निकाला तो हाथ पकड़ कर चुम लिया और चुमते ही उस को शर्मिन्दगी हुई और वोह जंगल में चला गया सर पे खाक डाली और मुंह पे तमाचे मारे और बहुत रोया।

सक़फ़ी जब जिहाद से वापस आया उस ने अपनी बीबी से अन्सारी का ह़ाल जानना चाहा बीवी ने वाक़िआ़ बयान किया और कहा : अल्लाह ऐसा भाई किसी को न दे। अन्सारी पहाड़ों में रोता और तौबा अस्तग़फ़ार करता फिरता था। सक़फ़ी ने उसे ढूंडा और तलाश कर के रसूले मक़्बूल की बारगाह में ले आया और उस के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई।

अल मुख़्तसर गुनाहों पर शर्मिन्दा होना और आइन्दा गुनाह न करने का पक्का इरादा करना इन्सानों के गुनाहों को मिटा देता है। سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

तौबा किस की क़ुबूल, किस की ना क़ुबूल ?

अल्लाह तबारक व तआ़ला पारह 4 सूरए निसा आयत नं 17-18 में फ़रमाता है :

वोह तौबा जिस का क़ुबूल करना अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल से अपने ज़िम्मए करम पर ले लिया हैं वोह उन्हीं की हैं जो

नादानी से बुराई कर बैठे और तौबा में जल्दी करे ऐसों पर अल्लाह अपनी रह़मत से रुजूअ़ फ़रमाता है और अल्लाह इ़ल्मो ह़िक्मत वाला है और वोह तौबा उन की नहीं जो गुनाहों में लगे रहते है यहां तक कि जब उन में से किसी को मौत आए तो कहे के अब मैं ने तौबा की और न काफ़िर मरने वालों की, उन के लिये हम ने दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

याद रहे अल्लाह पर कुछ भी वाजिब नहीं है वोह चाहे तो अपने बन्दे को बिग़ैर तौबा मुआ़फ़ कर दे और चाहे तो तौबा क़ुबूल करे, चाहे तो तौबा क़ुबूल न करे, बन्दे को चाहिये कि वोह हमेशा अपने रब से डरता रहे और अपने गुनाहों पर नादिम रहे, अस्तग़्फ़ार करता रहे।

मुसलमान चाहे कितना ही बड़ा गुनहगार हो, चाहे गुनाहे कबीरा करने वाला हो तो उस के लिये भी हमेशा की जहन्नम नहीं है। अल्लाह चाहे बिग़ैर सज़ा दिये मुआ़फ़ करे, चाहे तौबा क़ुबूल करे चाहे अ़ज़ाब करे बा'द में जहन्नम से निकाला जाए। येह अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत पर है। जैसा कि पारह 5 सूरए निसा आयात नं 48 में फ़रमाया गया :

तर्जमा : अल्लाह तआ़ला उसे नहीं बख़्शता के उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र और शिर्क के सिवा जो कुछ है जिस को चाहे मुआ़फ़ कर दे और जिस ने ख़ुदा का शरीक ठहराया उस ने गुनाह का बड़ा तुफ़ान बान्धा।

और फ़रमाता है सूरए निसा आयत नं 116 में कि

तर्जमा : अल्लाह उसे नहीं बख़्शता के उस का कोई शरीक ठहराए और उस के सिवा जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ कर देता है और जो अल्लाह तआ़ला का किसी को शरीक ठहराए वोह दूर की गुमराही में पड़ा।

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते है कि येह आयत एक बहुत ही बूढ़े ज़ईफ़ आ'राबी के ह़क़ में नाज़िल हुई कि जिस ने

सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में आ कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मैं बूढ़ा हूं गुनाहों में डूबा हुवा हूं बात येह है कि जब से मैं ने अल्लाह को पहचाना और मैं ईमान लाया तब से आज तक शिर्क न किया। सिवाए अल्लाह के किसी को वाली न बनाया जान बुझ कर कभी गुनाह न किया, मैं ने एक पल भी येह न सोचा कि मैं अल्लाह से भाग सकता हूं या रसूलल्लाह ! अपने गुनाह पर शर्मिन्दा हूं, तौबा करता हूं मग़फ़िरत चाहता हूं, सोचता हूं अल्लाह के यहां मेरा क्या ह़ाल होगा ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई।

इस आयत से साबित हुवा कि शिर्क तो न बख़्शा जाएगा अगर वोह शिर्क पर मरे। हां अगर मुश्रिक तौबा करे तो बख़्श दिया जाएगा, ईमान ले आए।

हुज़ूर के वसीले से उम्मतियों की दुआ का क़ुबूल होना

बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में हुज़ूरे पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ़ए क़ुबूल होती है और गुनाह मिटते है आप की शफ़ाअ़त मक़्बूल है, यहां तक की ख़ुद अल्लाह तबारक व तआ़ला हमें इस बात का हुक्म देता है : जैसा के क़ुरआने करीम पारह 5 सूरए निसा आयत नं 64 में है :

तर्जमा : और अगर वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठे तो ऐ मह़बूब ! वोह आप की बारगाह में ह़ाज़िर हो और अल्लाह से मुआ़फ़ी चाहे और अगर रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर वोह अल्लाह को बहुत तौबा का क़ुबूल फ़रमाने वाला पाएंगे।

यहां पर ख़ुद ख़ालिक़े काएनात हम को ता'लीम दे रहा है कि ऐ मेरे बन्दो ! अगर तुम से गुनाह सरज़द हो जाए और अगर तुम चाहते हो कि अल्लाह तुम्हें मुआ़फ़ करे तो तुम रसूलुल्लाह की बारगाह में ह़ाज़िर हो और उन को मेरी बारगाह में अपना वकील

बनाओ अगर रसूल सिफ़ारिश करेंगे तो मैं तुम्हें मुआफ़ कर दूंगा। سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ क्या मक़ाम है मक़ामे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ।

सरकारे दो आ़लम की वफ़ात शरीफ़ के बा'द एक आ'राबी रोज़ए अक़्दस पर ह़ाज़िर हुवा और क़ब्र शरीफ़ की ख़ाक सर पर डाली और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह! जो आप ने फ़रमाया वोह हम ने सुना और उस में येह आयत भी है : **वलव अन्नहू इज़्-ज़लमु...** बेशक! मुझ से ख़त़ा हुई मैं ने अपने आप पर ज़ुल्म किया और मैं अपने गुनाहों की मुआफ़ी के लिये आप के पास ह़ाज़िर हुवा आप मेरे रब से मेरे गुनाह की मुआफ़ी दिलवाइये, तो रोज़ए मुबारक से आवाज़ आई "तेरी बख़्शिश करने में आई" इस से साबित हुवा :

(1) अल्लाह तआ़ला की बारगाह में उस के मक़्बूलों को वसीला बनाना जाइज़ है और कामियाबी का ज़रीआ़ है।

(2) क़ब्र पर ह़ाजत के लिये जाना येह "जाऊका" में दाख़िल है।

(3) वफ़ात शरीफ़ के बा'द भी मक़्बूलाने बारगाह को "या" से निदा करना जाइज़ है।

(4) नेक बन्दे वफ़ात के बा'द भी मदद करते है।

(5) और येह भी साबित हुवा के वहाबिया जो वसीले का इन्कार करते है या वसीले से दुआ़ मांगने को शिर्क कहते है वोह सब झूटे है। यहां खुद अल्लाह तआ़ला रसूले मक़्बूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहता है। आप इन के लिये सिफ़ारिश करो। आप की सिफ़ारिश मक़्बूल है। سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ

दुआ़ आहिस्ता और गिड़गिड़ा कर मांगे

अल्लाह पाक हमें दुआ़ करने का त़रीक़ा बता रहा है कि मुझ से दुआ़ किस अन्दाज़ में किस त़रीक़े से मांगी जाए। जैसा की क़ुरआने करीम पारह 8 सूरए आ'राफ़ आयत नं. 55 में फ़रमाता हैं की :

तर्जमा : ऐ लोगो ! अपने रब से दुआ करो गिड़गिड़ा कर और आहिस्ता या'नी धीमी आवाज़ से । बेशक ! ह़द से बढ़ जाने वाले उस को पसन्द नहीं और ज़मीन के संवर जाने के बा'द उस में फ़साद न फैलाओ और उस से डरते और उस से उम्मीद रखते (दुआ करो) बेशक ! अल्लाह की रह़मत नेकों के करीब है ।

سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ुद ख़ालिके़ कुल मालिके कुल हम बन्दों को दुआ करने का त़रीक़ा सिखा रहा है कि मुझ से इस त़रह़ मांगो । ऐ बन्दो ! अल्लाह तआ़ला के सामने आ़जिज़ बन कर रो रो कर गिड़गिड़ा कर दुआ मांगो । और दुआ में चीखना चिल्लाना छोड़ो । याद रखो तुम किसी दूर वाले को नहीं पुकारते हमारा रब क़रीब है ।

अब इस आयत से वोह लोग सबक़ ह़ासिल करे जो दुआओं में ज़ोर ज़ोर से चिल्लाते है, माइक में दुआ करते है वोट्सएप पर दुआ की जाती है । जैसे मख़्लूक़ से मुनाजात करते है और ख़ालिक़ को भुला बैठे है और येह भी मा'लूम हुवा कि क़ुबूलियत के यक़ीन के साथ दुआ की जाए ।

ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि आहिस्ता दुआ करना येह ए'लानिया दुआ करने से सत्तर (70) दरजा अफ़्ज़ल है दुआ मोमिन का हथियार है । दुआ बहेतरीन इबादत है और एक अच्छी बात येह भी हैं कि अपने लिये दुआ करने वाला अपने दूसरे मोमिन भाइयो के लिये भी दुआ मांगे ।

दुआ करते वक़्त येह भी ख़याल रहे कि किसी नाजाइज़ अम्र के लिये दुआ न की जाए अपने अ़मल का सिला न मांगे क्यूंकि हमारे अ़मल में वोह कमाल नहीं, उस से उस का फ़ज़्ल मांगे हम हमारी हैसियत के मुत़ाबिक़ अ़मल करते है उस से उस का फ़ज़्ल मांगे वोह अपनी शान से अ़त़ा करेगा । जैसा के एक शायर ने कहा है :

तेरी इबादत के इवज़ में मैं भी कुछ मांगू येह मुझे मन्ज़ुर नहीं
मैं भी तेरा बन्दा हूं कोई मज़दूर नहीं

याद रहे मज़दूरी मांगोगे तो मज़दूरी मिलेगी और येह भी हो सकता है कि हमारी इबादत रद कर दी जाए, हमारे मुंह पे मार दी जाए, हम अपनी इबादत को मज़दूरी न समझे। क्यूंकि इबादत की तौफ़ीक़ मिलना येह रब का एह्सान है जब तुम उस का फ़ज़्ल त़लब करोंगे तो वोह तुम्हें वोह भी देगा जिस के तुम लाइक़ हो और वोह वोह भी देगा जो न तुम ने मांगा। बे शुमार अ़त़ा करेगा।

ह़ज़रते शैख़ुल इस्लाम फ़रमाते है :

जो बे असर हो कर रह न जाए दराज़ वोह दस्ते इल्तिजा़ कर
दुआ़ से कब रोकता हूं मैं तुझे मगर समझ बुझ कर दुआ़ कर

हम पर अ़ज़ाब क्यूं नहीं आता ?

हमारी बद आ'मालिया और नाफ़रमानियां इतनी बढ़ गई है जिस की कोई लिमीट नहीं अगली क़ौमों ने जो और जित ने बुरे काम किये थे वोह सब हम में मौजूद है मगर फिर भी हम बचे हुए है। मगर क्यूं ? और इन्तिहा की बात तो येह के ह़याते रसूल में नज़र इब्ने ह़ारिस और उस जैसे कुछ लोग येह दुआ़ए करते थे कि अगर मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) जो ले कर आए वोह (क़ुरआन) सच है और वोह तेरी त़रफ़ से है तो हम पर पथ्थरों की बारिश बरसा مَعَاذَ الله तब भी अल्लाह ने आ़म अ़ज़ाब नाज़िल नहीं किया येह क्यूं ?

इस का जवाब अल्लाह तआ़ला ने येह पाकीज़ा आयत नाज़िल कर के दिया पारह 9 सूरए अन्फ़ाल आयात नं. 33

तर्जमा : येह अल्लाह का काम नहीं है ऐ मह़बूब ! हम उन पर अ़ज़ाब नाज़िल करे जब तक आप उस में मौजूद हो और अल्लाह तआ़ला उन पर अ़ज़ाब भेजने वाला नहीं जब तक वोह तौबा अस्तग़फ़ार कर रहे है।

येह इस लिये के रसूल रह़मतुल्लिल आ़लमीन है और येह भी कि सुन्नते इलाहिया हमेशा से येह रही कि जब तक किसी क़ौम में उस का रसूल मौजूद हो तब तक उस क़ौम पर आ़म तबाही व बरबादी का अ़ज़ाब नहीं नाज़िल फ़रमाता। जिस के सबब से सब बरबाद हो जाए और कोई न बचे। और फिर येह भी बताया गया कि जब तक क़ौम में तौबा अस्तग़्फ़ार करने वाले ईमान वाले मौजूद हो तब तक आ़म अ़ज़ाब वोह न भेजेगा आज कल जो क़ौमे मुसलमानों से चीढ़ते है। वोह नहीं जानते के मुसलमानों के तौबा करने वालों के सबब से ही वोह बचे हुए है।

मज़्कूरा बाला इरशाद में अल्लाह तआ़ला ने दो अमानों का ज़िक्र फ़रमाया : एक है नबिये करीम का ज़ाहिरी वुजूदे मस्ऊ़द और दूसरी ईमान वालों का अस्तग़्फ़ार करना या'नी मुआ़फ़ी मांगना। नबिये करीम का रफ़ीक़े आ'ला से मिलने के बा'द वोह अमान तो अब न रही लेकिन दूसरी अमान या'नी कि मोमिन का वुजूद और उन का अस्तग़्फ़ार। तो येह क़ियामत तक रहेगी इसे यूं भी कहा जा सकता है कि नबिये करीम के ग़ुलामों का वुजूद जब तक है आ़म अ़ज़ाब आने वाला नहीं है कोई ज़माना न ईमान वालों से खाली होगा न तौबा करने मुआ़फ़ी मांगने वालों से ख़ाली होगा और जब ऐसी सूरते ह़ाल हो जाएगी कि दुन्या में कोई ईमान वाला न रहे तब तो क़ियामत आ जाएगी।

तौबा करने वालों की पाकीज़ा ज़िन्दगी (मताए ह़सन)

कुरआने करीम पारह 11 सूरए हूद आयत नं. 3 में अल्लाह पाक फ़रमाता है :

तर्जमा : अपने रब से मुआ़फ़ी मांगो फिर उस की त़रफ़ तौबा करो वोह तुम्हें (दुन्यवी ज़िन्दगी में भी) एक मुक़र्रर वक़्त तक बहुत अच्छा बरतने देगा और फ़ज़ीलत वाले को उस का फ़ज़्ल

पहुंचाएगा और अगर (तुम ने तौबा न की) तुम ने मुंह फैर लिया तो मुझे तुम पर बड़े दिन (क़ियामत) के अज़ाब का ख़ौफ़ है।

येह वा'दा है अल्लाह के पैग़म्बर सय्यिदुना हूद عَلَيْهِ السَّلَام का और येह वा'दा है अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का के अगर तुम ने तौबा की तो वोह तुम्हें मताए ह़सन अ़ता करेगा मताए ह़सन क्या है तो रिवायतों में है कि तुम्हें ज़िन्दगी बसर करने का अच्छा सामान देगा या'नी लम्बी उ़म्र, ऐशो इशरत, नेक औलाद और ब कसरत फ़ाइदे देगा मा'लूम हुवा कि इख़्लास के साथ सब्र और सच्ची तौबा करना दराज़िए उ़म्र और रिज़्क़ की कसरत के लिये बेहतरीन अ़मल है।

देखिये कि तौबा करने वाले को क्या क्या और कैसे कैसे इन्आ़मात मिलते है, क़ौमे हूद की ना फ़रमानियां जब ह़द से बढ़ गई तो अल्लाह तआ़ला ने उस क़ौम पर बारिश बन्ध कर दी और क़ौम की औरतों को बांझ कर दिया, जब येह लोग बहुत ज़ियादा परेशान हुए तो उस ज़माने के पैग़म्बर ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ौम को समझाया। पारह 12 सूरए हूद आयत नं. 52

तर्जमा : ऐ मेरी क़ौम ! अपने रब से मुआ़फ़ी चाहो और उस की त़रफ़ झुक जाओ (अगर तुम ऐसा करोगे) वोह तुम पर ज़ोर की बारिश भेजेगा, और तुम्हारी ताक़तो क़ुव्वत बढ़ाएगा और तुम गुनाह की त़रफ़ न पलटो।

एक मरतबा सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ ले गए तो अमीरे मुआ़विया के एक ख़ादिम ने आप से औलाद न होने की फ़रियाद की उस ने कहा मैं मालदार आदमी हूं मगर मेरी कोई औलाद नहीं है मुझे कोई ऐसा अ़मल बताओ के मुझे अल्लाह औलाद अ़ता करे आप ने फ़रमाया अस्तग़फ़ार पढ़ा कर उस ने कसरत से अस्तग़फ़ार पढ़ना शुरूअ़ किया, वोह रोज़ाना सात सौ (700) मरतबा अस्तग़फ़ार

पढ़ने लगा इस की बरकत से अल्लाह तआ़ला ने उसे दस (10) बेटे अ़ता फ़रमाए।

जब इस बात की ख़बर अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहुंची तो उन्हों ने अपने नौकर से कहा कि "तूने इमाम को येह क्यूं नहीं पूछा कि येह अ़मल उन्हों ने कहां से लिया ?" जब उस ख़ादिम की इमाम से दोबारा मुलाक़ात हुई और जब उस ने इमाम से पूछा तो ह़ज़रत ने जवाब दिया : "क्या तूने ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ السَّلَام का फ़रमान नहीं सुना ! **यज़ीदकुम कुव्वतन इला कुव्वतिकुम** और ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام का फ़रमान कि **युम्दीद कुम बि अम्वालिवं-व बनीन।**"

سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस आयत से येह जानने मिला कि कसरते रिज़्क़ व कसरते औलाद के लिये अस्तग़फ़ार पढ़ना क़ुरआनी अ़मल है।

दुआ़ में क्या न मांगे ?

इन्सान पर जब कोई तक्लीफ़ या आज़्माइश का वक़्त आता है तो वोह एक दम बोखला जाता है और जो मन में आए बिग़ैर सोचे समझे बोलने लगता है ख़ुद अपने लिये अपने माल के लिये, औलाद के लिये बद दुआ़ए करता है येह बहुत बुरा है येह नहीं करना चाहिये येह तो अल्लाह का बन्दो पर ख़ास फ़ज़्ल है कि वोह ऐसी दुआ़ए क़ुबूल नहीं करता बन्दा दुआ़ करता है अल्लाह हमे गारत करे कभी कहता है मौत दे, कभी औलाद के ह़क़ में ग़लत अल्फ़ाज़ युज़ करता है अगर ऐसी दुआ़ए जल्द क़ुबूल हो जाती तो ख़ुद हलाक हो जाता।

पारह 11 सूरए युनूस आयत नं 11 में है कि

तर्जमा : और अगर अल्लाह लोगों पर बुराई इतनी जल्दी भेजता जैसी वोह भलाई में जल्दी चाहता है तो उन का वा'दा पूरा हो जाता मगर अल्लाह तआ़ला अपने करम से बन्दों की वोह दुआ़ (बद दुआ़) क़ुबूल नहीं करता।

और अल्लाह पाक फ़रमाता है पारह 15 सूरए बनी इसराइल आयत नं 11 में कि आदमी बुराई की जल्दी करता है जैसे भलाई मांगता है और आदमी बड़ा जल्द बाज़ है। चाहिये तो येह के आदमी अपने हर काम में आहिस्तगी अपनाए ताकि नुक़्सान से बचा रहे।

बेशक ! नेकियां बुराइयों को मिटा देती है

नेकियां गुनाहे सगीरा के लिये कफ़्फ़ारा बन जाती है या'नी के गुनाहों को मिटा देती है चाहे वोह नेकी नमाज़ हो चाहे सदक़ात व ख़ैरात या ज़िक्रो अज़्कार या किसी मज़्लूम की हाजत रवाई या अपने गुनाहों पर नदामत या और कुछ भी जो भी नेकी हो।

मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि पांचो नमाज़ें, एक जुमुआ से दूसरे जुमुआ तक और एक रिवायत में है कि एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक येह सब कफ़्फ़ारा है जब के इन्सान गुनाहे कबीरा से बचे, गुनाहे कबीरा के लिये तौबा ज़रूरी है।

एक शख़्स ने किसी औ़रत को देखा और उस से कुछ नाशाइस्ता (अयोग्य) ह़रकत हुई उस पर वोह नादिम हुवा और सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िरे ख़िदमत हुवा और अपना ह़ाल बयान किया तो येह आयत नाज़िल हुई।

पारह 12 सूरए हूद आयत नं 114

तर्जमा : बेशक ! नेकियां बुराइयों को मिटा देती है येह नसीह़त हैं उन के लिये जो माने।

जब येह मुबारक आयत नाज़िल हुई तो उस बन्दे ने सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल किया कि या रसूलल्लाह ! येह खुश ख़बरी ख़ास मेरे लिये है या येह सब के लिये है ! फ़रमाया : सब के लिये। سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ अगर आदमी अपने गुनाहों पर नादिम हो, दो आंसू बहा ले दिल में ख़ौफ़ खाए और नेकियां करे तो ज़रूर बिल ज़रूर अल्लाह पाक बन्दे के गुनाह को मिटा देता है।

ख़ता़कारों का बुज़ुर्गों के वसीले से दुआ़ कराना

जब यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाई लोगों को अपने किये पर नदामत हुई और जब सय्यिदुना युसूफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़र्राख़ दिली से अपने भाइयों को मुआ़फ़ कर दिया तो सब ने अपने मोह़तरम वालिद ह़ज़रत याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ की, कि आप अल्लाह तआ़ला से हमारे गुनाहों की मुआ़फ़ी दिलवाइये अल्लाह तआ़ला ने इस वाक़िए़ को कु़रआने करीम में इस त़रह़ बयान फ़रमाया : पारह 13 सूरए यूसुफ़ आयत नं. 97 और 98 में

तर्जमा : बोले ऐ हमारे बाप ! हमारे गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगिये बेशक ! हम ख़ता़कार है फ़रमाया (ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने) जल्द ही मैं अपने रब से तुम्हारी बख़्शिश मांगूंगा और बेशक ! वोही बख़्शने वाला महेरबान है ।

मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों की बारगाह में ह़ाज़ि़र हो कर अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगना और अल्लाह पाक की बारगाह में उन को अपने लिये वसीला और सिफ़ारिश करने वाला बनाना येह कु़रआन से साबित है और सुन्नते सालिह़ीन है ।

अगर अल्लाह मोहलत न देता तो क्या होता ?

आदमी गुनाह करता रहता हैं और तौबा में ताख़ि़र करता रहता है फिर भी अल्लाह तआ़ला बन्दों पर महेरबानी करता है और ढील देता है, येह इस लिये के बन्दा तौबा करे अगर बन्दे को गुनाहों पर फ़ौरन पकड़ करता तो शायद ज़मीन पर चलने वाले में से सारे बन्दे हलाक हो जाते और कोई न बचता सिवाए अहलुल्लाह के जो थोड़े है जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कु़रआने करीम पारह 14 सूरए नहल आयत नं. 61 में फ़रमाता है :

तर्जमा : और अगर अल्लाह तआ़ला लोगों को उन के गुनाहों के सबब गिरिफ़्त (पकड़) कर लेता तो ज़मीन पर चलने

वाला कोई न छोड़ता लेकिन उन्हे एक मुक़र्रर वा'दे तक मोहलत देता है फिर जब उन का वा'दा आ जाएगा तो न एक घड़ी पीछे रहे न एक घड़ी आगे।

येह अल्लाह तआ़ला की शाने करीमी हैं कि वोह क़ुदरत के बा वुजूद अ़ज़ाब देने में जल्दी नहीं करता और येह भी बन्दे की बद आ'मालिया व जसारत (मुर्खाई) है कि वोह अल्लाह का मिलना यक़ीनी जानते हुए भी तौबा में जल्दी नहीं करता। येह कितनी बड़ी ग़लती है की खुद कमज़ोर होते हुए अल्लाह तआ़ला से लड़ाई लेता हैं।

ह़ज़रते राबिआ़ बसरिया رضی اللہ تعالٰی عنہا से किसी ने पूछा कि क्या अल्लाह बन्दे की तौबा क़ुबूल करता है ? तो आप ने फ़रमाया : जब तक अल्लाह तआ़ला बन्दे को तौबा की तौफ़ीक़ नहीं देता तब तक बन्दा तौबा कर ही नहीं सकता और जब वोह तौफ़ीक़ देता है तो ज़रूर वोह क़ुबूल भी करता है लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि वोह अल्लाह से तौफ़ीक़ मांगे और फिर तौबा करने में जल्दी करे इस से पहले की मौत आ जाए।

अल्लाह से तौफ़ीक़ मांगे जैसे अल्लाह के बरगुज़िदा बन्दों पैगम्बर सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मांगी। जिन का ज़िक्र आगे आ ही रहा है सारे मक़्बूलाने बारगाह तौबा करते थे और नेक अ़मले सालिह़ा की तौफ़ीक़ अपने रब से मांगा करते थे।

दुआ़ए ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام

क़ुरआने करीम पारह 19 सूरए नमल आयत नं 19 में है कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام ने इस त़रह़ दुआ फ़रमाई :

तर्जमा : अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब ! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे उन एह़सानों का शुक्र अदा करूं जो तूने मुझ पर और मेरे मां बाप पर

किये और येह के मैं वोह अच्छे काम करूं जो तुझे पसन्द हो और अपनी रह़मत से मुझे उन बन्दों से मिला (उन बन्दों में शामिल कर) जो तेरे कु़र्बे ख़ास के लाइक़ है।

और आप फ़रमाते है कि जो शुक्र करे वोह अपने ही भले को शुक्र करता है और जो कोई नाशुक्री करे तो मेरा रब सब से बे परवाह हैं सारी ख़ूबियां उस के लिये और सारी भलाई का ज़ाहिर करने वाला।

तौबा करने वालों पर बड़ा इनआ़म (बड़ा करम)

कु़रआने करीम पारह 19 सूरए फु़रक़ान आयत नं. 70 में है कि

तर्जमा : जो तौबा करे और ईमान लाए और नेक अ़मल करे तो ऐसों की बुराइयों को अल्लाह तआ़ला नेकियों से बदल देगा और अल्लाह बख़्शने वाला महेरबान है।

चन्द लोग रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर आए और अ़र्ज़ किया : हम ने बड़े बड़े गुनाह किये है क्या हम ईमान ले आए तो आप का रब हमारे गुनाह मुआ़फ़ कर देगा ? सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें बताया और अल्लाह ने येह ख़ुश ख़बरी सुनाई या'नी तौबा करने वाले को अल्लाह नेकी की तौफ़ीक़ देगा और उस के गुनाह मिटा देगा। जिन जिन लोगों ने सच्ची तौबा की और वोह हैं मुसलमान जो अपनी बीती हुई ज़िन्दगी के गुनाहों को याद कर के मुआ़फ़ी मांगे और आइन्दा गुनाह न करने का पक्का इरादा करे और अब नेक आ'माल करे तो जैसा के :

ह़दीस शरीफ़ में है कि रोज़े क़ियामत एक शख़्स ह़ाज़िर किया जाएगा फ़िरिश्ते अल्लाह तआ़ला के हुक्म से फ़िरिश्ते उस के छोटे गुनाह (गुनाहे सगीरा) उस को गिनाते रहेंगे वोह इक़रार करता रहेगा और बड़े गुनाहों के पैश होने से डरता रहेगा उस के बा'द उस को कहा जाएगा तेरे हर एक गुनाह के बदले तुझे एक नेकी अ़ता की

गई येह फ़रमाते हुए नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरे पर अल्लाह तआ़ला और उस के शाने करम पर खुशी हुई और आप मुस्कुरा दिये।

और येह कि येह अल्लाह तआ़ला का इन्आ़म है। सूरए जुमुआ़ में हैं :

तर्जमा : येह अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल है वोह जिसे चाहे अ़ता करे। سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

तौबा में जल्दी करना चाहिये

कुरआने करीम पारह 23, सूरए फ़ातिर आयत नं. 5 में है कि :

तर्जमा : ऐ लोगो ! बेशक ! अल्लाह का वा'दा सच्चा है तो हरगिज़ तुम्हें दुन्या की ज़िन्दगी धोका न दे और हरगिज़ तुम्हें बड़ा फ़रेबी शैत़ान धोका न दे।

अक्सर होता येह है कि दुन्यवी लज़्ज़तों में डूब कर आदमी आख़िरत को भूल जाता है और होता येह है कि अक्सर इन्सान को शैत़ान येह तसव्वुर दिलाता है कि अभी तो लम्बी उ़म्र बाक़ी है अभी ऐ़श कर लो बा'द में तौबा कर लेना और फिर वोह येह भी कहता है कि अल्लाह बड़ा करीम है मुआ़फ़ कर देगा, इब्लीस के फ़रेब में से येह बड़ा फ़रेब है कि वोह तौबा में ताख़िर करवाता और टालता है।

आदमी को तौबा करने में जल्दी करना चाहिये और शैत़ान के फ़रेब में न आना चाहिये कहीं ऐसा न हो के अचानक मौत आ जाए और बिग़ैर तौबा ही मर जाए या कहीं ऐसा न हो के अल्लाह बा'द में तौबा की तौफ़ीक़ ही न दे या छीन ले। अ़क़्लमन्द वोह है जो तौबा में जल्दी करे और अपनी दुन्या और आख़िरत दोनो संवार ले।

गुनहगारो ! अल्लाह की रहमत से मायूस न हो

कुरआने करीम पारह 24 सूरए ज़ुमर आयत नं. 53 में हैं कि :

तर्जमा : ऐ महबूब ! तुम फ़रमा दो ऐ मेरे बन्दो ! जिन्हों ने (गुनाह कर के) अपने ऊपर ज़ुल्म किया, तुम अल्लाह की रहमत से मायूस न हो । बेशक ! अल्लाह सारे गुनाह मुआफ़ कर देगा, बेशक ! वोही बख़्श ने वाला महेरबान है ।

मुश्रिकीन में से चन्द आदमी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए और उन्हों ने अर्ज़ किया कि बेशक ! आप का दीन तो बहुत अच्छा है हक़ और सच्चा है मगर हम से बड़े बड़े गुनाह सादिर हुए है बहुत सी मा'सियतों (बुराइयों) में हम मुब्तला रहे क्या किसी तरह हमारे गुनाह मुआफ़ हो सकते है उस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि अल्लाह ज़रूर मुआफ़ कर देगा ।

तौबा करने वालों के हक़ में फ़िरिश्तों की दुआए

पारह 25 सूरए मुअमिन आयत नं. 7 में है कि

तर्जमा : वोह फ़िरिश्ते जो अर्श उठाते है और जो उन के इर्द गिर्द है वोह अपने रब की हम्द के साथ उस की पाकी बयान करते रहते है और उस पर ईमान लाते है और गुनहगार मुसलमानों की मग़फ़िरत चाहते है कहते हैं ऐ हमारे रब ! तेरी रहमत और इल्म हर चीज़ में समाई है तू उन्हें बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले और उन्हें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले ।

मलाइकए हामिलीने अर्श जो कुर्बत और मन्ज़िलत में दूसरे मलाइका से अफ़्ज़ल है और उस के इर्द गिर्द वाले या'नी उस के आस पास चारों तरफ़ जो फ़िरिश्ते रहते है उन को "करोंबी" कहते है और जो मलाइका में साहिबे सियादत है और वोह **सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही** की तस्बीह करते है और अल्लाह पाक की वहदानियत

की गवाही देते है वोह हम गुनहगार सियाहकारों के हक़ में अ़र्ज़ करते है। ऐ हमारे रब ! जिन्हों ने तौबा की तू उन की मग़फ़िरत फ़रमा और येह भी कहते है कि उन के बाप दादा बीवियों और औलाद में जो नेक और ईमान वाले है उन्हें भी उन से मिला या'नी जन्नत में दाख़िल कर। سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ

गुनहगारों के हक़ में हुज़ूरे पाक की दुआ

कुरआने करीम पारह 24 सूरए मोमिन आयत नं. 55 में है कि

तर्जमा : ऐ महबूब ! सब्र करो। बेशक ! अल्लाह का वा'दा सच्चा है और अपनों के गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहो।

या'नी ऐ महबूब ! अपने गुनहगार ख़ासो आ़म मुसलमानों के गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगो। سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ

मुआ़फ़ करने वाला ख़ुदा, हुक्म देने वाला ख़ुदा, और फिर किस को ? अपने महबूब को और क्या हुक्म ? जो तुम्हारे हैं उन के गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहो, क्या अब भी ख़ुदा मुआ़फ़ न करेगा ? अरे अगर मुआ़फ़ न करना होता तो हुक्म ही नहीं देता ? यहां तक कि सारे नबियों ने दुआ़ की, फ़िरिश्तों ने दुआ़ की जैसा कि सूरए मोमिन आयत नं. 7 में मज़कूर हुवा और पारह 25 सूरए शूरा आयत नं. 5 में है कि **तर्जमा :** फ़िरिश्ते अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते है और ज़मीन वालों के लिये मुआ़फ़ी चाहते है।

और इन सब के ऊपर येह कि हमारे सरकार हुज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रमाया : अपनी उम्मत के लिये मग़फ़िरत त़लब करो कि वोह तुम से उम्मीद रखते है।

चुनान्चे, आप हर रोज़ कम से कम सत्तर (70) मरतबा अस्तग़फ़ार फ़रमाते रहते थे और इस अन्दाज़ में उम्मत की ता'लीम व तरबियत फ़रमाते थे कि आप की पैरवी करते हुए वोह भी कसरत

से अस्तग़्फ़ार करे और या गफ़्फ़ारो की तस्बीह़ पढ़ते रहे और जब इस अ़मल की मुख़्लिसाना साबित क़दमी के नतीजे में अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से मग़फ़िरत ह़ासिल होगी तो वोह नबिये करीम ही की ता'लीमो तरबियत का समरा (फल) होगा और इसे नबिये करीम ही का बख़्शवाना कहा जाएगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह फ़रमाता है मुझ से मांगो मैं अ़त़ा करूंगा

पारह 24 सूरए मुअमिन आयत नं 60 में है कि

तर्जमा : और तुम्हारा रब फ़रमाता है मुझ से दुआ़ करो मैं क़ुबूल करूंगा।

तो ऐ लोगो ! अपने रब से सुवाल करो वोह अ़त़ा करेगा क्यूंकि वोह कभी वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करता उस के ख़ज़ाने भरे हुए है।

कुछ बेवुक़ूफ़ कहते है :

"दाता है बड़ा रज़्ज़ाक़ मेरा भरपूर ख़ज़ाने है उस के
येह सच है मगर ऐ दस्ते दुआ़ हर रोज़ तक़ाज़ा कौन करे"

और अक़्लमन्द वोह है जो अपने रब से मांगे मगर कभी अपनी इ़बादत का बदला न मांगे जैसे

तेरी इ़बादत के इ़वज़ में मैं भी कुछ मांगू येह मुझे मन्ज़ुर नहीं
मैं भी तो तेरा बन्दा हूं कोई मज़दूर नहीं

बस हम मज़दूरी न मांगे, अ़मल का बदला न मांगे, उस से उस का फ़ज़्ल मांगे, करम मांगे अपने और अपने भाइयों के गुनाहों की मग़फ़िरत मांगे पूरी उम्मत के लिये मांगे यहां तक के सय्यिदुना ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर क़ियामत तक आने वाले नेक और बद सारे मुसलमानों के लिये मांगे जब वोह देने में कन्जुस नहीं तो हम मांगने में क्यूं कन्जुस बने। जैसा कि किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा :

मैं ही नादां चन्द कलियों पे क़नाअ़त कर गया
वरना गुलशन में इलाजे तंगिए दामन भी था

बहुत मांगो, रोज़ मांगो, मगर समझ बुझ कर मांगो इख़्लास व क़ुबूलियत के यक़ीन के साथ मांगो और ह़ज़रत शैख़ुल इस्लाम सय्यिद **मुहम्मद मदनी अशरफ़ी** जिलानी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते है :

जो बे असर हो कर रह न जाए दराज़ वोह दस्ते इल्तिजा कर
दुआ़ से कब रोकता हूं तुझे मगर समझ बुझ कर दुआ़ कर

अरे जब वोह ख़ालिके कुल मालिके कुल, रज़्ज़ाक़े ह़क़ीक़ी ख़ुद देने पर है तो हम लेने में क्यूं कन्जुसी करे बस येह के समझ बुझ कर मांगो।

दुआ़ए ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

पारह 26 सूरए अह़क़ाफ़ आयत नं 15 में है कि

तर्जमा : अ़र्ज़ की, कि ऐ मेरे रब ! मेरे दिल में डाल के मैं तेरे उन एह़सानात का शुक्र करूं जो तूने मुझ पर और मेरे मां बाप पर किये और मैं वोह नेक काम करूं जो तुझे पसन्द आए और मेरी औलाद में भलाई रख मैं तेरी ही त़रफ़ रुजूअ़ लाया और मैं मुसलमान हूं।

अल्लाह की ने'मतों का ए'तिराफ़ करना, और उस का शुक्र बजा लाना येह इतनी बड़ी ने'मत है कि इस से ने'मतें बढ़ती है और अल्लाह दुआ़ए क़ुबूल फ़रमाता है तो इन बुज़ुर्गों ने अल्लाह पाक से दुआ़ कर के हम को दुआ़ मांगने का सलीक़ा सिखा दिया।

गुनाहे कबीरा

अल्लाह तआ़ला पारह 27 सूरए नज्म आयत नं 32 में फ़रमाता है :

तर्जमा : वोह जो गुनाहे कबीरा और बे ह़याइयों से बचते हैं मगर बस इतना की गुनाह के पास गए और रुक गए बेशक ! तुम्हारे रब की मग़फ़िरत वसीअ़ है ।

गुनाहों की दो (2) क़िस्में है सगीरा और कबीरा

गुनाहे कबीरा वोह गुनाह है जिस पर अ़ज़ाबे सख़्त हो या फिर जिस पर वईद (Warning) आई हो, आदमी के ह़क़ में बेहतर है कि वोह हमेशा ताइब रहे मुआ़फ़ी मांगता ही रहे ।

अल्लाह के आगे रोना

क़ुरआने करीम पारह 27 सूरए ह़दीद आयत नं. 16 में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि

तर्जमा : क्या ईमान वालो को अभी वोह वक़्त नहीं आया कि उन के दिल अल्लाह की याद और उस ह़क़ (क़ुरआने करीम) के लिये झुक जाए जो नाज़िल हुवा ।

उम्मुल मोमिनीन ताहिरा, आ़बिदा, ज़ाहिदा मह़बूबाए मह़बूबे ख़ुदा, सिद्दीक़े अक्बर की लख़्ते जीगर, राज़दारे रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती है रसूले मक़्बूल अपने दौलत कदए अक़्दस से बाहर तशरीफ़ ले गए तो मुसलमान आपस में हंस रहे थे और येह हंसने वाले भी मा'मूली मुसलमान न थे बल्कि सह़ाबए रसूल थे आप ने उन को हंसते देख कर फ़रमाया : "तुम हंसते हो जब के अभी तक तुम्हारे लिये तुम्हारे रब की त़रफ़ से अमान नहीं आई" और फिर सरकार ने येह फ़रमाया कि तुम्हारे हंसने पर येह आयत नाज़िल हुई ।

सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया अब इस हंसी का कफ़्फ़ारा क्या हैं या रसूलल्लाह ! फ़रमाया इतना ही रोना और आप ने येह भी फ़रमाया कि ज़ियादा हंसना दिल को सख़्त कर देता है ।

ह़िकायत : ह़ज़रते फुज़ैल इब्ने अयाज़ की तौबा का वाक़िआ़

ह़ज़रत का शुमार अहले तक़्वा में होता है आप अपने दौर के कामिल शैख़ व बा कमाल बुज़ुर्ग है मगर इब्तिदाई दौर में आप के

मुआ़मले बड़े अ़जीब थे, आप टाट का लिबास सर पर ऊनी टोपी, गले में तस्बीह डाल कर जंगल में डाका डाला करते थे और आप डाकूओं के लीडर थे और इस ह़ालत में भी आप रोज़े से रहते थे नमाज़े पंजगाना के पाबन्द थे तिलावते कु़रआने करीम किया करते थे यहां तक के साथियों में से कोई नमाज़ न पढ़ता तो उसे जमाअ़त से (अपनी लूटमार करने वाली जमाअ़त से) अलग कर देते थे यहां तक के काफ़िलों को लूटते वक़्त काफ़िले में कोई औ़रत हो तो उस काफ़िले को भी छोड़ देते थे।

मगर आप का ख़ौफ़ काफ़िले वालों पे हमेशा छाया रहता था अब हुवा यूंकि एक मरतबा एक काफ़िला क़रीब में ही आ कर रुका उस में कोई एक शख़्स बुलन्द आवाज़ से क़िराअत कर रहा था और वोह येही सूरत पढ़ रहा था सूरए ह़दीद आयत नं. 16 **तर्जमा :** क्या ईमान वालो के लिये अभी तक वोह वक़्त नहीं आया कि उन के दिल अल्लाह के ज़िक्र और इस क़ुरआन से ख़ौफ़ ज़दा हो जाए !

इस आयत का उस वक़्त आप पर ऐसा असर हुवा कि जैसे किसी ने दिल पर तीर मार दिया हो आप ने खुद से कहा कि येह लूटमार कब तक ? अब वोह वक़्त आ चुका है अल्लाह की राह पर चल पड़े येह कह कर आप ने उसी वक़्त सच्ची तौबा की बहुत रोए और सब बुरे काम छोड़ दिये।

येह सच्ची तौबा ने आप को डाकूओं के सरदार के बदले वलियों का सरदार बना दिया तो येह है सच्ची तौबा का नतीजा और येह है अल्लाह का फ़ज़्ल। سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ

तौबतन्नुसूह़ क्या है ?

पारह 28 सूरए तह़रीम में है कि

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की त़रफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीह़त बन जाए क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारी

(तमाम) बुराइयां उतार दे और तुम्हें ऐसे बागों में ले जाए जिस के नीचे नहरे बहे।

या'नी ऐसी तौबा करो जो तौबा करने वाले की ज़िन्दगी बदल डाले और तौबा के बा'द उस की ज़िन्दगी इबादतों और इताअ़तों से भर जाए और गुनाह हमेशा के लिये छुट जाए ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते है कि तौबतुन्नुसूह़ येह है कि तौबा के बा'द आदमी कभी गुनाह की त़रफ़ न पलटे, जैसा कि थन से निकला हुवा दूध कभी वापस पिस्तान में नहीं जाता।

तौबा करने वाले को ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام के वा'दे

पारह 29 सूरए नूह़ आयत नं. 10 से 12 तक में है कि

तर्जमा : तो कहा ऐ लोगो! अपने रब से (अपने गुनाहों की) मुआ़फ़ी मांगो वोह बड़ा मुआ़फ़ करने वाला है वोह तुम पर ज़ोरदार बारिश भेजेगा और माल से और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे लिये बाग बगीचे बना देगा और नहरे जारी कर देगा।

जब नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام की क़ौम बलाओं में मुब्तला हुई तो सय्यिदुना नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام ने अपनी क़ौम को तौबा व अस्तग़्फ़ार करने को कहा और कहा कि अगर तौबा करोगे तो वोह तुम्हें ब कस्रत माल और औलाद अ़त़ा करेगा।

ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक शख़्स आप की ख़िदमत में आया और उस ने बारिश न होने की शिकायत की आप ने उसे अस्तग़्फ़ार करने का हुक्म दिया।

दूसरा एक शख़्स आया जिस ने तंग दस्ती की फ़रियाद की आप ने उसे भी तौबा व अस्तग़्फ़ार करने का हुक्म दिया एक तीसरा शख़्स आया उस ने औलाद न होने की शिकायत की आप ने उस को भी वोही तौबा अस्तग़्फ़ार का हुक्म दिया एक चौथा शख़्स आया उस ने ज़मीनी पैदावार की किल्लत या'नी खेती बाड़ी बे रौनक होने की

फ़रियाद की तो आप ने उसे भी वोही तौबा अस्तग़्फ़ार का हुक्म दिया ।

हज़रते रबीअ़ बिन शैबा जो उस वक़्त हज़रत की मजलिस शरीफ़ में मौजूद थे उन्हों ने हज़रत से अ़र्ज़ की या इब्ने रसूलुल्लाह ! चन्द लोग आप की बारगाह में आए उन्हों ने क़िस्म क़िस्म की शिकायते की आप ने सब को एक ही जवाब दिया तो हज़रत ने येही ऊपर वाली सूरए नूह़ की आयत पढ़ी और बताया कि इस ज़रूरतों के लिये येह क़ुरआनी अ़मल है । سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

जाहिलों से दूर हट जाओ

मौलाना रूम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का एक शे'र काबिले ग़ौर है आप फ़रमाते है

सोहबते सालेह़ तुरा सालेह़ कूनद सोह़बते तालेह तूरा तालेह कूनद

अस्ह़ाबे कहफ़ का कुत्ता नेकों की सोहबत में रह कर जन्नती बन जाता है और पैगम्बर ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام का बेटा काफ़िरों की दोस्ती व सोहबत अपना कर जहन्नमी बन जाता है तो इन्सान को चाहिये के काफ़िरों बद मज़्हबों या जाहिलों से अपने को दूर रखे ।

येह भी एक ह़क़ीक़त है के आपस में सिलए रह़मी करो रिश्ते न तोड़ो वग़ैरा वग़ैरा मगर येह बात जाहिलों के साथ नहीं अह़मक, बे वुक़ूफ़, जाहिल या बेबाक जो जी में आए वोह बकते रहते है किसी को गाली देते है इल्ज़ाम लगाते है बोहतान लगाते है ऐसो के साथ न रहा जाए लोगों को बुराई से रोका जाए अगर न रुके तो उन से किनारा कर लिया जाए आइए देखे के इस बाब में अल्लाह तआ़ला क्या फ़रमाता है :

अल्लाह तबारक व तआ़ला क़ुरआने करीम पारह 9 सूरए आ'राफ़ आयत नं. 199 में फ़रमाता है कि **तर्जमा :** ऐ मह़बूब लोगों

को मुआ़फ़ करते रहो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से किनारा कर लो।

या'नी दूर हट जाओ समझाओ माने तो ठीक है और न माने तो तुम्हारा काम सिर्फ़ समझाना है नसीह़त करना है ज़बर दस्ती मनवाना तुम पर ज़रूरी नहीं है तो बे फ़ाइदा ग़ैर ज़रूरी बातें न करो अपना वक़्त बरबाद न करो मगर दूर हो जाओ और रब फ़रमाता है पारह 19 सूरए फ़ुरक़ान आयत नं. 63 में कि **तर्जमा :** जाहिल तुम से बात करे तो कहो बस (दूर से) सलाम।

यहां अल्लाह तआ़ला के ख़ास बन्दों का ज़िक्र है कि जब जाहिल उन से बहस (चर्चा) या मुजादला (झगड़ा) करता है तो उसे कहते है कि बस सलाम या'नी येह सलाम सलामे मुतारीकत या'नी जुदाई का सलाम है न बह़स न लड़ाई जगड़े बस तुझ से दूरी या'नी तू तेरे रस्ते मैं मेरे रस्ते और अल्लाह तआ़ला पारह 27 सूरए ज़ारियात में फ़रमाता है।

तर्जमा : ऐ मह़बूब ! तुम अगर उन से मुंह फेर लो तो तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाइदा देता है।

जब कि हमारा मुआ़मला इस से उल्टा है, हम बुरो का साथ नहीं छोड़ते है।

यहां येह कहा गया कि अगर तुम को ऐसा लगे कि समझाने से मानेगा तो अल्लाह फ़रमाता है समझाओ समझाना मुसलमानों में से जो समझना चाहे उसे फ़ाइदा देता है और अगर तुम ने मुंह फेर लिया और हट गए तो तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं और अल्लाह तआ़ला पारह 27 सूरए नज्म आयत नं. 29 में फ़रमाता है। तुम उन से मुंह फेर लो जो हमारी याद से फिर गया और उस ने सिर्फ़ दुन्या की ज़िन्दगी के सिवा कुछ न चाहा।

या'नी जिस के दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं जो बकवास करते वक़्त बातों का अन्जाम नहीं सोचता और जो बस दुन्या ही चाहता है ऐसो से दूर हट जाए मुंह फेर लो, रिश्ते न रखो अपना अ़ज़ीज़ तो बस वोही हो सकता है जो ख़ुदा का हो जो ख़ुदा का नहीं वोह हमारा नहीं पारह 29 सूरए मुज़्ज़म्मिल आयत नं. 10 में है कि

तर्जमा : ऐ महबूब ! जो लोग बुरा भला कहते है उस पर सब्र करो और उन्हें अच्छी तरह छोड़ दो ।

या'नी किसी को जवाब न दो बकने दो इन बकने वालों को ।

एक मरतबा हम ने शैख़ुल इस्लाम से सुवाल किया : हज़रत ! हमारी मुख़्तसर ज़िन्दगी है नेकियां तो कुछ हमारे पास नहीं है हमे जन्नत कैसे मिलेगी ? फ़रमाया : एक तो सालिहीन व मोमिनीन की दुआओं से तुम्हें हिस्सा मिलेगा और दूसरा वोह जो लोग तुम्हें गालियां देते है तुम्हारी ग़ीबत करते है इल्ज़ाम लगाते बोहतान लगाते है बुरा भला कहते है, तुम्हारा माल खाते है दर हक़ीक़त वोह अपनी नेकियां तुम्हें देते है और तुम्हारे गुनाह अपने ऊपर लेते है तुम्हारा इन तकालिफ़ों पर ख़ामोश रहना और अल्लाह की रिज़ा के लिये सब्र करना, बदला न लेना तुम को जन्नत के मुस्तहिक़ बना देंगे । سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

बुराई से न रोकने वाले

देखा येह जाता है कि आज मुआ़शरे में बुराई आ़म हो गई है लोग ए'लानिया बुरे काम करते नज़र आते है और अफ़्सोस तो येह कि हमारे क़ौमी लीडर लोग (नेता) वग़ैरा और मज़हबी लीडर और उ़लमा, इमाम मुक़र्रीर हज़रात में से शायद ही कोई अपनी क़लम या अपनी ज़बान उन को रोकने के लिये चलाते है बल्कि जिन की ज़िम्मेदारी थी के **नहयुन अ़निलमुन्कर** या'नी बुराइयों से रोकने का काम करे वोह ख़ामोश बैठे है और ख़ामोश ही नहीं बल्कि कही कही

तो साथ देते नज़र आते है अख़्लाक़ी गिरावट हद से ज़ियादा बढ़ चुकी है।

मुआ़मला इतनी ह़द तक बिगड़ चुका है कि हमें वहाबियों अहले ह़दीस वग़ैरा की ग़लती तो नज़र आती है मगर ख़ुद हमारी अपनी नज़र नहीं आती उ़र्स के मौक़ेअ़ पर देगे पकती है पर मस्जिदे ख़ाली है ख़ुद स्टेज पर बैठ कर लोगों को नमाज़ की दा'वत देने वाले बे नमाज़ी है लोग सूदी लैन दैन करते है, बे ह़याई आ़म है और उ़लमा ख़ामोश हैं आइये देखे के इस बाब में क़ुरआन हमारी क्या रहनुमाई करता है।

पारह 6 सूरए माइदह आयत नं. 62 में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

तर्जमा : तुम बहुत लोगों को देखोगे कि गुनाह और ज़ियादती और ह़राम ख़ोरी पर दौड़ते हैं, बेशक! बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं उन्हें पादरी और दरवेश गुनाह की बात कहने और ह़राम ख़ोरी से क्यूं नहीं रोकते ? बेशक! येह बहुत बुरे काम है जो कर रहे है।

यहां पादरी और दरवेश से मुराद मज़हबी लीडरान है कि वोह क्यूं बुरा काम करने वाले को नहीं रोकते ? वोह बेशक! बुरे काम कर रहे है मत़्लब कि येह लोगों को बुराई से नहीं रोकने वाले बहुत ही बुरे काम कर रहे है।

इस से मा'लूम हुवा कि उ़लमा पर नसीह़त करना वाजिब हैं और जो आ़लिम अ़म्र बिल मा'रूफ़ और नहयुन्न अ़निलमुन्कर करना छोड़ देता है वोह येह रोकना तर्क करना उन्हें गुनाह में बराबर शामिल कर देता है यहां तक कहा गया कि जो इन्सान गुनाह होते देख कर ख़ामोश रहा वोह गुंगा शैत़ान है।

आज देखा येह गया कि उ़लमा तक़रीरें करते है और अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से नाज़िल की गई रह़मत की आयतें तो पढ़ पढ़

कर सुनाते है मगर लोगों को बुराई से नहीं रोकते और बा'ज़ तो मिम्बरे रसूल पर खड़े हो कर चुटकुले सुनाते है लफ्फ़ाज़ी करते है कुछ उ़लमा बुराई को देखते हुए इस लिये भी चुप रहते है कि अगर वोह बोलेंगे तो उन के नज़राने बन्द हो जाएंगे।

अल्लाह तआ़ला ने बुराई से न रोकने वालों पर ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की ज़बान से ला'नत भेजी है साबित शुदा बात है कि बुराई से लोगों को रोकना उ़लमा पर वाजिब है और बुराई से रोकने से दूर रहने वाला तर्के वाजिब कर के अपने को गुनाह में शामिल करता है।

लोगों को अल्लाह की नाफ़रमानी से रोकने वाले

फ़रिज़ए तब्लीग़ येह है कि जिस त़रह़ लोगों को अल्लाह तआ़ला की इबादत के लिये बुलाया जाना चाहिये उसी त़रह़ उन को बल्कि उस से भी ज़ियादा उन को बुराइयों से रोकना भी चाहिये लोगों को अल्लाह के अ़ज़ाब से डराना और गुनाह से रोकना ज़ियादा ज़रूरी है।

जिस त़रह़ नमाज़ पढ़ने से पहले अगर ग़ुस्ल वाजिब हो तो ग़ुस्ल और ग़ुस्ल वाजिब न हो तो वुज़ू ज़रूरी है बिल्कुल इसी त़रह़ भलाई करने से पहले बुराई छोड़ना ज़रूरी है कोई इन्सान पहले मुर्ति पूजा करता था अब अगर कलिमा पढ़ कर ईमान ला कर नमाज़ पढ़ना चाहे तो पहले मुर्ति पूजा छोड़ना ज़रूरी है हमारे कलिमे में येह भी इस्बात इलल्लाह (इक़रार) से पहले नफ़ी लाइलाह है यानी पहले बात़िल का इन्कार और फिर ह़क़ का इक़रार।

हमारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें फ़रमाया मैं जिस काम करने का तुम्हें हुक्म दूं उस में से जितना बन सके इतना करो या'नी फ़राइज़ो वाजिबात तो पूरा करो मगर नवाफ़िल जो बन सके इतना करो मगर जिस काम से रोकू उस से पूरे पूरा रुक जाओ।

अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इसी लिये भेजा कि वोह अल्लाह के बन्दों को डराए येह सिर्फ़ बिशारत देने वाले न थे बल्कि बशीरो नज़ीर थे। यानी ख़ुश ख़बरी देने वाले और डराने वाले। क़ुरआने करीम पारह 7 सूरए अन्आ़म आयत नं. 19 में है कि

तर्जमा : मेरी त़रफ़ इस क़ुरआन में वह़ी की गई कि मैं तुम्हें इस से डराऊं (यानी ख़ौफ़ दिलाऊं) और जिन जिन को क़ुरआन पहुंचे (वोह भी डराए)।

सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दौर के तमाम इन्सानों को फ़रमा दिया कि मेरी त़रफ़ वह़ी की गई कि मैं तुम्हें डराऊं के तुम हुक्मे इलाही की मुख़ालिफ़त न करो और कहा मेरे बा'द क़ियामत तक आने वाले इन्सान हो या जिन्न जिन्हें येह क़ुरआन पहुंचे सब को मैं हुक्मे इलाही की मुख़ालिफ़त से डराऊं।

जब येह आयते करीमा नाज़िल हुई तो सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ैसरो किसरा, (रूम व फ़ारस के बादशाहों) को दा'वते इस्लाम के लिये ख़ुत़ूत़ (लेटर) भेजे ह़दीस शरीफ़ में है कि जिस को भी क़ुरआन पहुंचा गोया के उस ने नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा और आप का कलाम सुना।

इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि **मम बलग़** से मा'ना मुराद येह है कि इस क़ुरआन से तुम को डराऊ और वोह भी डराए जिन को येह क़ुरआन पहुंचे (वोह भी डराए।)

तिर्मिज़ी शरीफ़ की ह़दीस में है कि "अल्लाह तरो ताज़ा करे उस को जिस ने हमारा कलाम सुना और जैसा सुना वैसा पहुंचाया।" बहुत से पहुंचाए हुए (पहुंचाने वाले) सुनने वालों से भी ज़ियादा अहल (योग्य लायक़) होते है और एक रिवायत में है कि ज़ियादा "अफ़्क़ह" (फ़क़ीह) होते है इस बात से फ़ुक़हाए किराम की क़द्रो मन्ज़िलत मा'लूम होती है।

अल हासिल अल्लाह तआला के बन्दों को अल्लाह पाक की ना फ़रमानियो से बचाना/डराना बेहद ज़रूरी है और बेहतरीन अमल है जिस का तर्क करना गुनाह में शामिल होना है और जिस पर अमल करना अल्लाह के हुक्म पर अमल करना है।

नहयुन अनिलमुन्कर ज़रूरी है

हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि अल्लाह तआला ने मोमिनीन को हुक्म फ़रमाया कि वोह अपने दरमियान ममनूआत (मन्अ किये गए काम) न होने दे और अपनी हैसियत या ताक़त भर गुनाहों से मन्अ करे अगर ऐसा न किया तो अज़ाब खताकार और गैर खताकार सब को पहुंचेगा।

सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह चन्द मख़्सूस लोगों के गुनाह के सबब आम अज़ाब नहीं नाज़िल फ़रमाता जब तक के लोग ऐसा न करे के अपने बीच में गुनाह के कामों को होता हुवा देखे और मन्अ करने की ताक़त होते हुए उसे न रोके।

मा'लूम हुवा कि जो क़ौम या जो समाज "नहयुन अनिलमुन्कर" या'नी बुराई से रोकना तर्क कर देती है उस क़ौम पर बुरी बलाए आती है। अल्लाह तआला कुरआने करीम पारह 9 सूरए अन्फ़ाल आयत नं. 25 में फ़रमाता है :

तर्जमा : और (ऐ लोगो) उस फ़ित्ने से डरो जो हरगिज़ तुम में से सिर्फ़ ज़ालिमों ही को न पहुंचेगा और जान लो कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है।

येह मत समझो कि सिर्फ़ ज़ालिमों ही पर मुसीबत या बला आएगी और तुम बचे रहोगे अगर लोगों को गुनाहों से रोकना तर्क कर दिया या'नी लोगों को गुनाह में देख कर ख़ामोश रहे तो बलाए सब पर आएगी।

तरीक़ए दा'वत

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने पाकीज़ा व मुक़द्दस कलाम कुरआने करीम फुरक़ाने ह़मीद में पारह 14 सूरए नहल आयत नं. 125 में इरशाद फ़रमाता है :

तर्जमा : अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से और उन से बह़स करो उस त़रीक़े पर जो सब से बेहतर हो। बेशक! तुम्हारा रब अच्छी त़रह़ से जानता है जो उस की राह से बहका और वोह जानता है जिस ने राह पाई।

इस एक आयते शरीफ़ा में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हमें कई सारे अह़काम ता'लीम फ़रमाए अब इसे समझे बिग़ैर जो तब्लीग़ करते है या जो **जाहिल ट्रस्टी** माइक हाथ में ले कर तक़रीरे करते है वोह गुमराह है और गुमराही की त़रफ़ बुलाते है जैसे देवबन्दी तब्लीग़ी जमाअत वाले और दूसरे तक़रीर करने के शौक़ीन जो न जानते हुए भी लगे रहते है। इमाम को हटा कर उस की जगह खुद शुरूअ़ हो जाते हैं।

एक सुवाल है कि पक्की तदबीर या अच्छी नसीह़त येह वोही कर सकता है जो पहले इ़ल्म ह़ासिल करे, उ़लमाओ की सोह़बत में या दर्सगाहों में जाए दीन की बारीकियां समझे अब यहां तो मुआ़मला येह है कि रिक्षा चलाने वाला, गेरेज में काम करने वाला भी बयान देता है और वकील, एन्जीनीयर बिल्डर भी बयान देता है क्या उन के लिये ज़रूरी नहीं था के पहले इ़ल्म ह़ासिल करते !

एक दौर था जब उ़लमा तब्लीग़ करते थे, औलिया तब्लीग़ करते थे और अब जाहिल तब्लीग़ व तक़रीर करते है। सरकार ने फ़रमाया है : **ना अहल के सिपुर्द जब कोई काम सोंपा जाए तो बस क़ियामत का इन्तिज़ार करो।** यहां तो ऐसे लोग इमामत करते है की नमाज़ी उन के पीछे नमाज़ पढ़ने में कराहत महसूस करता है।

दीन की दा'वत देने वाला लोगों को दीन की त़रफ़ बुलाने वाला खुद दीनदार हो येह ज़रूरी है यहां तो कुछ मग़रूर, मुतकब्बीर झूट बोलने वाले, धोका फ़रेब करने वाले भी बयान शुरूअ़ कर देते है और वाक़ेई जो अहल है इल्म रखते है वोह ख़ामोश है मुआ़मला बस येह है कि **नीम ह़कीम ख़तरे जान ।**

अपने क़राबतदारों को डराओ ।

अल्लाह तबारक व तआ़ला कुरआने करीम पारह 19 सूरए शूअ़रा आयत नं. 214 में फ़रमाता है :

तर्जमा : ऐ मह़बूब ! अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराओ ।

जो क़रीब है उन्हें अल्लाह पाक की नाफ़रमानियों और नाराज़गी के काम से रोको जब के आज कल यहां तो हो येह रहा है कि बेटा शराब का कारोबार करता है और बाप चालीस दिन के चिल्ले में जा रहा है बेटी बिग़ैर पर्दा किये बाज़ारों में खुल्ली घुमती है और बाप दुन्या को दीन सिखाने जाता है दूकान में नौकरों से वज़्न में चोरिया करवाते हैं और हम लोगों को नेकी की दा'वत दे रहे है लोग अपने घरों में रिश्तेदारों में पड़ोसियों में तब्लीग़ नहीं करते । अफ़्सोस !

जो लोगों को नेकी की त़रफ़ बुलाए

अल्लाह तआ़ला कुरआने करीम पारह 24 सूरए ह़ामीम आयत नं. 33 में फ़रमाता है कि :

तर्जमा : और उस से बढ़ कर किस की बात अच्छी हो सकती है कि जो लोगों को अल्लाह की त़रफ़ बुलाए और खुद नेकी करे और कहे कि मैं मुसलमान हूं ।

ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا फ़रमाती है कि मेरे नज़्दीक येह आयत मुअज़्ज़िन ह़ज़रात के ह़क़ में नाज़िल हुई और

एक क़ौल येह है कि जो कोई भी किसी भी त़रीक़े से लोगों को दीन की दा'वत दे कर अल्लाह की त़रफ़ बुलाए वोह सब इस में दाख़िल है दा'वते इलल्लाह के बड़े मर्तबे है।

मौत से मह़ब्बत

मौत एक ऐसी ह़क़ीक़त है कि तमाम जानदार को उस से साबिक़ा है कोई जान ऐसी नहीं जिस के लिये मौत नहीं येह अलग बात है कि मौत किसी के लिये मह़बूब चीज़ है इसी लिये की मौत उस के लिये मह़बूब से मुलाक़ात का ज़रीआ़ है और मौत किसी के लिये अ़ज़ाब है।

कुछ लोग है जो ईमान नहीं लाते न अल्लाह से डरते है और दुन्यवी ज़िन्दगी ही को सब कुछ समझ बैठे है, ऐसे लोगों से अल्लाह पाक का फ़रमान है, पारह 1 अल बक़रह आयत नं. 94 में :

तर्जमा : ऐ मह़बूब ! तुम उन से फ़रमा दो कि अगर पीछला घर (आख़िरत) सिर्फ़ तुम्हारे ही लिये है तो तुम मौत की तमन्ना तो करो ! या'नी मौत मांगो।

येह उन लोगों से ख़ित़ाब था जो दौरे रिसालत के यहूद और ईसाई कहा करते थे कि जन्नत में हमारे सिवा कोई नहीं जाएगा येह उन की ख़ाम ख़याली थी मौत की मह़ब्बत और लिक़ाए परवर दिगार का शौक़ येह अल्लाह तआ़ला के मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा रहा वोह जानते है रूह़ का जिस्म से अलग होते (मरते) ही क़ब्र में जाने के बा'द क़ब्र में रसूले करीम तशरीफ़ लाने वाले है इसी लिये वोह ईमान पर ख़ातिमे की दुआ़ए करते रहते है। ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हर नमाज़ के बा'द दुआ़ फ़रमाते थे : **अल्लाहुम्मरज़ुक़नी शहादतन फ़ी सबिलीक़ व वफ़ातन बी बलदी नबिय्यिक** या'नी ऐ अल्लाह ! मुझे तेरी राह में शहादत और तेरे नबी के शहर में वफ़ात अ़त़ा फ़रमा।

तमाम सहाबए किराम और ख़ास कर के बद्र और उहुद के शुहदा और बैअ़ते रिज़्वान वाले सहाबा अल्लाह की राह में शहादत की तमन्ना रखते थे, सहाबिए रसूल हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ ने काफ़िरों के लश्कर के सरदार रुस्तम को जो ख़त भेजा उस में लिखा कि **इन्न मअ़न क़ौमन युहिब्बुल मौत** या'नी मेरे साथ एक ऐसी क़ौम है जो मौत को महबूब रखती है।

मोमिन हमेशा मौत को शहद से ज़ियादा मीठी समझते है येह अलग बात है कि किसी दुन्यवी परेशानी से तंग आ कर मौत की तमन्ना न करनी चाहिये, क्यूंकि दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना है और जेल तोड़ कर भागना नहीं चाहिये की येह जेल तोड़ कर भागना (ख़ुदकुशी करना) गुनाह है।

येह भी एक अलग हक़ीक़त है कि मौत को महबूब रखते हुए भी मोमिन लम्बी उ़म्र चाहता है तो वोह सिर्फ़ इस लिये कि नेकियां करने का ज़ियादा मौक़अ़ मिल जाए और गुनाहों से तौबा करने का ज़ियादा मौक़अ़ मिल जाए ख़ुश नसीबी येह है कि उ़म्र लम्बी हो और नेकियां ज़ियादा हो और लम्बी उ़म्र मिले तो तौबा अस्तग़फ़ार कर ले कुछ दीन की और कुछ क़ौम की ख़िदमत कर ले।

मौत की हक़ीक़त

मौत एक ऐसी हक़ीक़त है कि उस से कोई बच न सका न कोई बच सकेगा। **बेशक !** हर नफ़्स को मौत का मज़ा चखना है साथ में येह भी जान लेना ज़रूरी है कि बिग़ैर अल्लाह तआ़ला के चाहे कोई जान मर नहीं सकती है। जैसा कि पारह 4 आले इ़मरान आयत नं. 145 में है कि

तर्जमा : कोई जान बिग़ैर हुक्मे ख़ुदा मर ही नहीं सकती।

और उस का दूसरा पहलू येह है कि जब मौत का वक़्त आ

जाए कोई तुम्हें बचा नहीं सकता। जैसा कि पारह 5 सूरए निसा आयत नं. 78 में है कि

तर्जमा : तुम जहां कही भी (छुपे) रहो मौत तुम तक पहुंचेगी चाहे तुम मज़्बूत क़िले में हो।

या'नी इन्सान मौत से बचने के चाहे कितने भी हथकन्डे अपना ले जब हुक्मे अल्लाह आ पहुंचा तो अब तुम्हें कोई नहीं बचा सकता अब मरना ही है उस से बचने की कोई सूरत है ही नहीं।

मौत से पहले आज़्माइश

अल्लाह तआ़ला कुरआने करीम पारह 17 सूरए अम्बिया आयत नं. 35 में फ़रमाता है :

तर्जमा : हर नफ़्स को मौत का मज़ा चखना है और हम तुम्हें आज़्माते है भलाई और बुराई से और तुम्हें हमारी ही त़रफ़ वापस आना है।

अल्लाह तआ़ला बन्दे को राह़तो तक्लीफ़, आज़्माइशो बला और ने'मत दे कर आज़्माता है कि कौन साबिरो शाकीर रहता है और कौन नहीं वैसे ही अल्लाह तआ़ला ने पारह 29 सूरए मुल्क आयत नं. 1 में फ़रमाया :

तर्जमा : बड़ी बरकत वाला है वोह (अल्लाह) जिस के क़ब्ज़े में तमाम मुल्क है और वोह सब कुछ कर सकता है उसी ने मौत और ज़िन्दगी पैदा फ़रमाई ताके देखे कि कौन तुम में से अच्छे आ'माल करता है।

अब बेहतर है कि आदमी खुद देखे कि उस ने कैसे आ'माल किये ? क्या वोह कसोटी में खरा उतरा की नहीं उतरा।

अल्लाह पाक हमें सच्ची पक्की तौबा नसीब फ़रमाए और नेकी की दा'वत देने बुराई से रोकने और अपनी क़ब्रो आख़िरत संवार ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

तौबा के मुतअ़ल्लिक़ ज़ियादा मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये मोह़द्दिसे आज़म मिशन की शाएअ़ कर्दा किताब **अल्लाह मेरी तौबा** को पढ़िये और इस किताब और दीगर (मोह़सिने आज़म मिशन की जानिब से छपने वाली किताबों) को ख़रीद कर अपने मर्हूमीन के ईसाले सवाब के लिये मुफ़्त तक़्सीम कीजिए।

किताबों की छपाई में मर्हूमीन के ईसाले सवाब के लिए रक़म (डोनेट) करने के लिए मोह़सिने आज़म मिशन का कोन्टेकट करे :

मिशन H/O सेन्ट्रल कमेटी बेंक डिटेल :

IDFC FIRST BANK : MOHSINE AZAM MISSION

AC NO : 100 8831 2174

IFSC CODE : IDFB 0040309

मिशन का मक़सद क़ौम की ख़िदमत

अम्नो मह़ब्बत की छांव में, ख़िदमत सुब्ह़ो शाम करें,

आओ ! हम सब मिलझुल कर, पैग़ामे नबी को आम करे.